वर्ष :: 33 अंक : 11
पृष्ठ : 08 :: मूल्य 2 रुपए मात्र

मिथिला
वर्णन
स्वच्छ पत्रकारिता, स्वस्थ पत्रकारिता

/mithilavarnan

झारखंड-बिहार का लोकप्रिय हिन्दी साप्ताहिक

पूरे परिवार के लिये आध्यात्मिक पत्रिका

अवश्य पढ़ें-
निखिल-मंत्र-विज्ञान
14ए, मैनरोड, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : (0291) 2624081, 263809

बोकारो :: रविवार, 11 दिसंबर, 2022 News & E-paper : www.varnanlive.com E-mail : mithilavarnan@gmail.com

पैरवी है, तो पदवी है

सियासत... झारखंड कांग्रेस में नहीं है 'आल इज वेल' - प्रदेश अध्यक्ष पद से हटाए जा सकते हैं राजेश ठाकुर

कार्यालय संवाददाता

बोकारो : पैरवी है, तो काफी कुछ है। पैरवी पर भांति-भांति की सुविधाओं से लेकर नौकरी तक मिलने की बातें जगजाहिर है। पैरवी पर पद भी मिलते हैं, चाहे वह सरकारी, गैरसरकारी हो या राजनीतिक। झारखंड कांग्रेस पर इन दिनों इसी पैरवी का आरोप लग रहा है और यही वजह है कि प्रदेश में पार्टी की अंदरूनी स्थिति इन दिनों कुछ ठीक नहीं है। 'ऑल इज वेल' यानी सब कुछ अच्छा नहीं चल रहा। प्रदेश नेतृत्व की भूमिका भी सवालों के घेरे में आ गई है। दरअसल, यह सब जिलाध्यक्षों के चयन के बाद हुआ है। जिलाध्यक्षों के चयन में विवाद के लिए प्रदेश नेतृत्व को जिम्मेदार माना जा रहा है। इससे केंद्रीय नेतृत्व की भी किरकिरी हुई। पहली लिस्ट में एक भी दलित, अल्पसंख्यक और महिला जिलाध्यक्ष नहीं थे। बाद में केसी वेणुगोपाल के निर्देश पर सूची बदली गयी।

सूत्रों के अनुसार बिहार में पार्टी का नेतृत्व बदले जाने के बाद झारखंड में भी बदलाव की जमीन तैयार की जा रही है और वर्तमान प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर को हटाए जाने की चर्चा तेज हो गई है। केंद्रीय नेतृत्व के स्तर पर भी इसे लेकर मंथन और घमर्थन हो रहा है। वहीं, गुटबाजी भी तेज हो गई है। आलाकमान तक नेता अपनी बातें पहुंचाते हुए खुद को सबसे योग्य साबित करने की जुगत में लग गए हैं। खबरों की मानें, तो अध्यक्ष पद की दौड़ में पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोधकांत सहाय, डॉ. अजय कुमार, गीता कोड़ा, बंधु तिर्की सहित अन्य कई नेता अहम दावेदार हैं। इधर, कांग्रेस झारखंड में अध्यक्ष पद के लिए आदिवासी कार्ड खेलने के मूड में है और ऐसे में बंधु तिर्की और गीता कोड़ा प्रबल दावेदार समझे जा रहे हैं।

डैमेज कंट्रोल... तुम भी खुश, हम भी खुश

यह मामला दिल्ली तक पहुंचने के बाद क्षतिपूर्ति (डैमेज कंट्रोल) करने का प्रयास संगठन का विस्तार कर किया गया। यानी तुम भी खुश, हम भी खुश वाली कहावत चरितार्थ हुई। जिलाध्यक्ष उमेश ही रह गए और विरोध कर रहे नेताओं को प्रदेश कमेटी में जगह दी गई। जिलाध्यक्ष के दावेदार जवाहर महथा को प्रदेश महासचिव, साधुशरण गोप और प्रमोद सिंह को प्रदेश सचिव बनाया गया है। इसके अलावा बोकारो विधानसभा से चुनाव लड़ चुकी श्वेता सिंह को और कुमार गौरव को प्रदेश महासचिव बनाया गया है। जबकि अशोक श्रीवास्तव को वर्किंग कमेटी में शामिल किया गया है। पार्टी गलियारों में चर्चा है कि विवाद गहराता देख प्रदेश कांग्रेस ने सही समय पर कमेटी का विस्तार किया। प्रदेश कमेटी के विस्तार में सभी जिला के सभी समुदाय के लोगों को जगह दी गई है, इसलिए संभावना है कि अब विवाद पर विराम लगेगा। विरोध करने वाले और विरोध सहने वाले, दोनों सभी को साथ में लेकर सभी की भावनाओं की कद्र करते हुए काम करने के वायदे करते देखे जाने लगे हैं। अब डैमेज कंट्रोल भले ही हुआ, परंतु नई टीम बनने से पहले ही जिस तरह संगठन में आपसी विवाद की **(शेष पेज- 7 पर)**

बोकारो में कांग्रेस दो फाड़, नई टीम बनी नहीं कि बगावत शुरू

बोकारो जिला कांग्रेस के जिलाध्यक्ष उमेश प्रसाद गुप्ता को बनाए जाने पर यहां कांग्रेस पार्टी में दो भागों में बंट गई है। इससे पार्टी के वरीय नेता अंदरूनी रूप से नाराज दिख रहे हैं। नई टीम बनी नहीं कि बगावत शुरू हो गई। कई नेता खुलकर उमेश के चयन के खिलाफ सामने आ गए। उन्होंने नियम और पैनल से अलग हटकर जिलाध्यक्ष बनाए जाने का आरोप लगाया। जानकारी के अनुसार जिलाध्यक्ष पद को लेकर साक्षात्कार में साधुशरण गोप, जवाहरलाल महथा, प्रमोद कुमार सिंह, मो. जमील अख्तर, महावीर सिंह चौधरी व मो. निजाम अंसारी से इंटरव्यू लिया गया था। इसके बावजूद बोकारो जिलाध्यक्ष उमेश प्रसाद गुप्ता बनाया गया। इंटरव्यू दिए कांग्रेस के नेताओं ने कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे से मिलकर ने यह जानकारी दी। कहा है कि उक्त चारों नेताओं को शॉर्टलिस्ट किया गया था। सभी शॉर्टलिस्ट उम्मीदवारों का इंटरव्यू 29 जुलाई को प्रदेश कार्यालय में लिया गया था। साक्षात्कार बोर्ड में प्रभारी अविनाश पांडे, प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर, पीआरओ, एपीआरओ, कृषि मंत्री बादल पत्रलेख, ग्रामीण विकास मंत्री आलमगीर आलम, जिला कोऑर्डिनेटर अशोक चौधरी शामिल थे। उक्त नेताओं ने लिखित आवेदन देते हुए कहा है कि साक्षात्कार का रिजल्ट 4 दिसंबर को प्रकाशित हुआ। प्रकाशित रिजल्ट में इंटरव्यू लिए उम्मीदवारों में से किसी को भी जिलाध्यक्ष नहीं बनाया गया है। कहा कि पैनल से बाहर उमेश प्रसाद गुप्ता को जिलाध्यक्ष बनाया गया है, जो उचित नहीं है। यह आपत्ति व्यक्ति हित में नहीं, बल्कि पार्टी हित में है। लिखित आवेदन में कहा है कि उमेश प्रसाद गुप्ता ने भी जिलाध्यक्ष के लिए आवेदन किया था, लेकिन आवेदन के साथ सदस्यता नंबर नहीं भरे जाने के कारण उनका नाम शॉट लिस्ट में नहीं हुआ। गुप्ता के बदले उनके सहयोगी निजाम अंसारी का नाम जोड़ा गया था। गुप्ता बोकारो जिला के ओबीसी के जिलाध्यक्ष रहते हुए मेंबर नहीं बने। नेताओं ने कई अन्य आरोप भी नवनियुक्त जिलाध्यक्ष पर लगाए हैं। इधर, प्रदेश सचिव पद साधुशरण गोप ने भी बोकारो में जिलाध्यक्ष मनोनयन के विवाद में अपना इस्तीफा दे दिया है।

बाल वैज्ञानिक डीपीएस बोकारो के छात्र अभिनीत ने फिर किया कमाल, साइंस कांग्रेस के नेशनल लेवल में पहुंचा

अब बोली में सुन और समझ सकेंगे इशारों की भाषा

कार्यालय संवाददाता

बोकारो : डीपीएस बोकारो में 10वीं कक्षा के छात्र अभिनीत शरण ने एक बार फिर अपने वैज्ञानिक कौशल का परिचय दिया है। उसने एक ऐसे सॉफ्टवेयर और मोबाइल एप का आविष्कार किया है, जो दिव्यांगों के लिए सहायक हो सकता है। आम तौर पर लोग नहीं बोल-सुन पाने वालों की बातें उनके इशारों से समझ नहीं पाते। ऐसे में उन दिव्यागों को काफी दिक्कते होती हैं, क्योंकि वह जिससे कुछ कहना चाहते हैं, वह उनकी बात समझ ही नहीं पाता। इस समस्या के समाधान के लिए अभिनीत ने गेस्चर टू स्पीच तकनीक का इजाद किया है। इसकी मदद से उनके द्वारा इशारों में बताए जाने वाली बातचीत को विभिन्न भाषाओं में आवाज के तौर पर सुना जा सकता है।

कंप्यूटर कोडिंग की मदद से यह सॉफ्टवेयर इशारों का ग्राफिकल एनालिसिस कर उसे स्पीच में कन्वर्ट करता है। इससे सामने वाला व्यक्ति उसकी बातों को सुनकर समझ सकता है। हिंदी और अंग्रेजी के साथ-साथ अन्य भाषाओं में भी यह सुविधा अभिनीत ने डाली है, ताकि जो जिस भाषा में सुनने लायक है. उसे उसी भाषा में बात समझाई जा सके। इसके लिए अभिनीत ने हाथ की विभिन्न मुद्राओं की बहुत सी तस्वीरों का इनपुट इस साफ्टवेयर में फीड किया है। इसके बाद बिंदुवार ग्राफिकल एनालिसिस के जरिए यह इशारों को बोली में बदल देता है। उसने अपने इस प्रोजेक्ट का प्रदर्शन डीपीएस **(शेष पेज- 7 पर)**

इधर, कोई खजूर पेड़ से बना रहा बायोडीजल, तो कोई मछली के कचरे से बायोगैस

डीपीएस बोकारो में आयोजित राज्यस्तरीय बाल कांग्रेस के दौरान धनबाद से आए नौवीं कक्षा के छात्र प्रिंस कुमार ने खजूर पेड़ से बायोडीजल बनाने पर रिसर्च प्रस्तुत किया। खजूर के पेड़ से बायोडीजल के साथ-साथ नेचुरल क्रूड ऑयल, वाइन और ग्लिसरीन तैयार करने पर शोध किया है। उसने बताया कि खजूर के सूखे पेड़ से सिल्क जैसा धागा भी तैयार किया जा सकता है। वहीं, खजूर के खाद्य व पेय उत्पाद रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में काफी कारगर हैं। खजूर के पेड़ से तैयार बायोडीजल जहां मामूली पेट्रोल मिश्रित करने से वाहन में ईंधन के रूप में प्रयुक्त हो सकता है, वहीं नेचुरल क्रूड ऑयल का प्रयोग खाना बनाने में भी किया जा सकता है। श्री अयप्पा पब्लिक स्कूल में 11वीं कक्षा की छात्रा गुनगुन ने मछली के उपभोग के बाद निकलने वाले कचरे और जलीय पौधे के आनुपातिक मिश्रण से बायोगैस निर्मित करने की तकनीक का इजाद किया है। उसने बताया कि इस बायोगैस का इस्तेमाल खाना पकाने में किया जा सकता है और जितने में एक एलपीजी सिलेंडर आता है उसकी आधी से भी कम लागत में उतनी ही बायोगैस तैयार की जा सकती है। एमजीएम हायर सेकेंडरी स्कूल में आठवीं कक्षा के छात्र सक्षम झा ने ग्रामीणों के लिए एक सॉफ्टवेयर में अनेक सुविधाएं डालने की नवोन्मेषता की है। उसने ग्रामीण परिवेश में तकनीक का इस्तेमाल कर लोगों को विभिन्न प्रकार की सरकारी सुविधाएं एवं आवश्यक सहायता उपलब्ध कराने के लिए एक खास सॉफ्टवेयर और मोबाइल ऐप विकसित किया है। इसमें पशुपालन, एंबुलेंस, पुलिस सहायता, खाद-बीज, आधार-बैंकिंग एवं अन्य सुविधाओं के लिए अलग-अलग सेक्शन बनाए गए हैं। इन पर क्लिक करते ही संबंधित पदाधिकारी अथवा कर्मचारी से उनका संपर्क स्थापित हो सकता है।

– संपादकीय –

‘मोदी-मैजिक’ बरकरार

भारत के दो राज्यों गुजरात एवं हिमाचल प्रदेश और एक नगर निगम दिल्ली के चुनावों में इन क्षेत्रों के मतदाताओं ने जो जनादेश दिया है, उसने बता दिया कि वोटर ही लोकतंत्र का असली मालिक है। गुजरात में भारतीय जनता पार्टी ने कीर्तिमान गढ़े, तो हिमाचल में कांग्रेस ने नया जीवन पाया। वहीं, दिल्ली में आम आदमी पार्टी को खुश होने का मौका मिला। इन चुनावी नतीजों ने जाहिर कर दिया कि आज के मतदाता किसी भी पार्टी के दबाव में नहीं हैं। ये नतीजे जहां लोकतंत्र की सुदृढ़ता को दर्शा रहे हैं, वही देश की राजनीति के नई दिशा में अग्रसर होने के संकेत भी दे रहे हैं। कहने को भले ये दो राज्यों के विधानसभा एवं दिल्ली के नगर निगम के चुनाव थे, लेकिन ये चुनाव ज्यादा महत्वपूर्ण एवं उत्साह वाले इसलिये बने कि इन्हीं चुनावों को 2024 के लोकसभा चुनावों से जोड़कर देखा जा रहा था। उस लिहाज से निःसंहेद गुजरात में बीजेपी को मिली ऐतिहासिक जीत बहुत बड़ी है और बहुत कुछ बयां कर रही है। पिछले यानी 2017 के विधानसभा चुनावों में बीजेपी को कांग्रेस ने कड़ी टक्कर दी थी। तब 268 विधायकों वाली विधानसभा में उसे 99 सीटें आई थीं, जो सरकार गठन के लिए आवश्यक संख्या 95 से मात्र चार ज्यादा थीं। स्वाभाविक रूप से माना जा रहा था कि अगर कांग्रेस थोड़ा और जोर लगा दे या बीजेपी थोड़ी सी लापरवाही दिखा दे तो चुनाव में उलटफेर हो सकता है। लेकिन न तो कांग्रेस ज्यादा जोर लगा पाई और न ही बीजेपी ने कोई चूक दिखाई। उसने अब तक के सारे रिकार्ड तोड़ डाले, माधवसिंह सोलंकी के समय कांग्रेस के 149 सीटों से जीत के रिकार्ड को भी उसने तोड़ डाला। भाजपा ने इस राज्य में नया इतिहास रच डाला और 54 प्रतिशत वोट प्राप्त करके नया कीर्तिमान स्थापित किया। एक बार फिर यह साबित हुआ कि गुजरात में नरेंद्र मोदी का जादू और वर्चस्व अब भी बरकरार है। गुजरात के मतदाताओं ने राज्य में पिछले 27 वर्षों से चल रही हुकूमत को ही पुनः अवसर देने का फैसला करके यह भी संकेत दिया है कि काम करने वाले दलों को मतदाता सर-आंखों पर बैठाती ही है। मतदाताओं ने विशेष रूप से प्रधानमंत्री के वादों और कथनों पर यकीन करने के साथ ही उसे गुजरात का गौरव माना और भाजपा को हटाना उचित नहीं समझा। इधर, कांग्रेस द्वारा चुनाव से ज्यादा भारत जोड़ो यात्रा को प्राथमिकता देना कोई राजनीतिक परिपक्वता की निशानी नहीं मानी जा सकती। इसका नतीजा इसके लिए नुकसानदायक ही रहा। आम आदमी पार्टी की बात करें, तो गुजरात में जिस प्रकार दिल्ली की इस पार्टी ने अपने बूते पर मतदाताओं के बीच सेंध लगाने की कोशिश की उसका असर भी हुआ और इसने मुख्य रूप से कांग्रेस के वोट बैंक को छिन्न-भिन्न करते हुए उसमें हिस्सेदारी की। इसकी वजह से राज्य में यह पार्टी धराशायी हो गयी और बमुश्किल 182 सदस्यीय विधानसभा में 20 के नीचे का आंकड़ा ही छूने में कामयाब हो सकी। आप ने भी जितने बड़े बोल बोले एवं बड़ी बातें की उसकी तुलना में उसे सफलता नहीं मिली। कुल मिलाकर कहें, तो गुजरात एवं हिमाचल ने आप की सत्ता-लोलुपता पर लगाम लगा दी है। राजनीतिक दलों के लिये ये नतीजे खुशी देने के साथ-साथ खतरे की घंटी भी है। एक चुनौती भी है कि मतदाताओं को हल्के में नहीं लेना चाहिए, न अपनी जागीर समझना चाहिए। आज का मतदाता जागरूक है और परिपक्व भी तथा मौका मिलने पर किंग मेकर की भूमिका निभाती है।

आप अपने विचार अथवा अपनी रचनाएं हमें निम्नलिखित ई–मेल पर भेज सकते हैं–
mithilavarnan@gmail.com, Contact : 9431379234
Join us on /mithilavarnan
Visit us on : www.varnanlive.com
(किसी भी कानूनी विवाद का निबटारा केवल बोकारो कोर्ट में ही होगा।)

बाल यौन-उत्पीड़न के विरुद्ध पोक्सो एक्ट के प्रति जागरुकता आवश्यक

अभिव्यक्ति

– डॉ. प्रभाकर कुमार –
बाल अधिकार कार्यकर्ता सह मनोवैज्ञानिक, बोकारो (झारखंड)।

बढ़ता बाल यौन उत्पीड़न आज एक ज्वलंत चिंता का विषय बन चुका है। लगातार बाल उत्पीड़न कई रूपों में समाज में देखे जा रहे हैं और इसकी खबरें आए दिन सामने आती हैं। नौनिहालों को इससे बचाने के लिए ही पोक्सो कानून 2012 है, परंतु इसकी जानकारी नहीं होने से लोग बस भुक्तभोगी तक ही बनकर रह जाते हैं। समुदाय, समाज, अभिभावकों और बच्चों के साथ-साथ सभी हितधारकों तक को पोक्सो 2012 की जानकारी होनी चाहिए। बच्चों की सुरक्षा के लिए यह एक कठोर कानून है, जिसमें आरोपी के लिए सजा-ए-मौत तक का भी प्रावधान है। कानून में बदलाव होने के बाद 12 वर्ष तक की बच्ची के साथ दुष्कर्म के दोषी को मौत की सजा का प्रावधान किया गया है । पोक्सो के पहले के प्रावधानों के तहत दोषियों के लिए अधिकतम सजा उम्रकैद और न्यूनतम सजा सात वर्ष की जेल थी। बाल यौन उत्पीड़न के अन्य अपराधों की सजा भी कठोर है। पोक्सो कानून के दायरे में 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चों से किसी भी तरह का यौन व्यवहार शामिल है।

नाबालिग बच्चों के प्रति यौन-उत्पीड़न , यौन शोषण, पोर्नोग्राफी जैसे यौन अपराधों और छेड़छाड़ के मामलों में कार्रवाई हेतु पोक्सो कानून के अंतर्गत अलग-अलग अपराध के लिये अलग-अलग सजा निर्धारित की गई है। बच्चों को मानसिक व शारीरिक रूप से प्रताड़ित किया जाना बाल शोषण है। बाल शोषण करने वाले व्यक्ति आसपास के रिश्तेदार, मित्र, पड़ोसी, जानकार होते हैं। इनकी हरकतें से उनके कृत्य का पता लगाना मुश्किल होती है। कई बार बाल दुर्व्यवहार मजाक करते-करते कर लिया जाता है, तो कई बार अनुशासन व सुधार के नाम पर। कुछ लोग अपनी दबी यौन कुंठा एवं मनोविकार से ग्रस्त होने के कारण ऐसा करते हैं।

बच्चों के साथ घिनौने अपराध को रोकने, ऐसा करने वाले को कठोर दंड देने के उद्देश्य से केंद्र सरकार ने बाल यौन शोषण अपराध संबंधी कठोर कानून बनाते हुए बाल यौन शोषण सरंक्षण नियम, पोक्सो कानून 2012 बनाया है। 18 वर्ष से कम उम्र के नाबालिगों के उत्पीड़न होने पर पोक्सो कानून के तहत तुरंत गिरफ्तारी का प्रावधान है। पोक्सो कानून के तहत सात वर्ष की सजा से लेकर उम्रकैद का प्रावधान व साथ मे जुमार्ना आदि भी ।

पोक्सो कानून के अंतर्गत कोई ऐसा व्यक्ति जो यह जानता है कि किसी बच्चे का यौन शोषण हुआ है और इसकी जानकारी उसे नजदीक के थाने में देनी चाहिए, अगर वह ऐसा नहीं करता है तो उसे भी छह महीने की जेल और आर्थिक दंड भी लगाई जाती है।

पोक्सो अधिनियम बाल संरक्षक की जिम्मेदारी पुलिस को सौंपती है। पुलिस की यह भी जिम्मेदारी बनती है कि मामले को 24 घंटे के भीतर न्यायपीठ बाल कल्याण समिति (सीडब्ल्यूसी) की निगरानी में लाए, ताकि सीडब्ल्यूसी बच्चे की सुरक्षा व सरंक्षण की दिशा में जरूरी कदम यथा- मुआवजा, पीड़ित को चिकित्सीय सहायता, पुनर्वास आदि के लिये सटीक कदम उठा सके।

पोक्सो रूल 2020 में यह भी वर्णित किया गया कि कोई भी संस्थान या शेल्टर होम या बच्चों के आने जाने रहने पढ़ने का स्थान, जहां नाबालिग बच्चों का आना-जाना लगा रहता है वहां के कर्मियों- स्थायी एवं अंशकालिक संविदा तदर्थ सभी का पुलिस वेरिफिकेशन जांच एवं सामाजिक पृष्ठभूमि जांच बिल्कुल अनिवार्य है। सभी स्कूलों निजी एवं सरकारी मे पोक्सो कानून 2012, पोक्सो रूल 2020 की जागरूकता को अनिवार्य की गई है। बाल अधिकारों व कानून के प्रति सभी हितधारकों को शत-प्रतिशत जागरूक किया जाना अनिवार्य है।

बाल यौन अपराधी की मानसिकता की पहचान करें। बच्चों को सभी तरह के बाल यौन शोषण व व्यवहार से बचाना है, ताकि बच्चों का सर्वांगीण व मनोवैज्ञानिक पद्धति से विकास हो पाए। बच्चों के यौन शोषण से संबंधित अधिकतर मामलों में दोषी उनके रिश्तेदार, परिचित या घर के लोग होते हैं, जिनके कारण पेडोफिलिया की पहचान मुश्किल होती है।

अभिभावकों व शिक्षकों के लिए यह जरूरी है कि बच्चों को गुड टच और बैड टच की जानकारी दें। बच्चों की बातों या समस्याओं को नजरअंदाज न करें। बच्चों के इमोशनल सपोर्टर बनें। बच्चों के बर्ताव में जरा सा भी बदलाव दिखे, तो उसकी पहचान करें। बच्चों को ऑनलाइन सुरक्षित रहने के भी गुर सिखाएं। बच्चों के साथ दोस्ताना संबंध रखें, ताकि कोई बाहर वाला बच्चों के साथ भावनात्मक संबंध विकसित कर बच्चों को दिग्भ्रमित न कर पाए। ऐसे प्रयासों से ही हम बाल यौन-उत्पीड़न की चिंतनीय चुनौती पर विजय पा सकते हैं और देश का भविष्य सुरक्षित रख सकते हैं, क्योंकि बच्चे ही देश का भविष्य हैं।

(यह लेखक के निजी विचार हैं।)

मैथिली काव्यकृति

विषक वृक्ष

– शंभुनाथ –

आई किए बढ़ि गेलै सगरो,
दुष्कर्मक ई जाल।
यक्षप्रश्न ई सभकेर मन मे,
पूछय सतत सवाल।।

नैतिकताक पतन भ' रहलै
दानवताक उत्थान।
करय बाट दुष्कर्म
अकड़िके
पुनि ल' रहलै जान।।

एकरा लेल कहू के दोषी
माय-बाप परिवार।
या एकरा उसका रहलैये
मीडियाक व्यवहार।।

फिल्म भरल अपराध
नग्नता
कामुक अन्तरजाल।
विज्ञापन केर होर्डिंग टांगल
नांगट रूप कमाल।।

राजनीति केर चौसर पर
प्यादाक रूप मे बेटी।
परसि रहल बस भोग्य
बूझि
बनाके लाभक गोटी।।

सीमित परिवारो कम नै
दोषी
तेजल वृद्धक आशा।
एसगर घर मे कम वय
सन्तति
कुण्ठित भरल हताशा।।

शहरी जीवन बान्हि देलक
अछि
बन्द दीवारक बीच ।
सतत घरक इन्टरनेट टीवी
अपना लग आनय खीच।।

समय ने परसब संस्कार कें
सबतरि आपाधापी।
चौबीस घंटा अर्थ उपार्जन
पेट बढ़ल बनि पापी।।

तेजि रहल निज संस्कार
कें
पछिमक अंगीकार।
अर्ध नग्न बालाक भ्रमण
सं
नहि कोनो प्रतिकार।।

हमर दर्शन पर वनिता कें
मातृ रूप मे देखब।
विश्व हमर परिवार बन्धु
छी
निजत्वता के पेखब।।

छोड़ि मानवी गुण दानवता
सदिखन पोसि रहल छी।
विषक वृक्ष जे अपने रोपल
रहि-रहि कोसि रहल छी।।

बच्चों के शोध, वैज्ञानिक चेतना और नवाचार का साक्षी बना डीपीएस बोकारो

संवाददाता

बोकारो : साइंस फॉर सोसाइटी, झारखंड की ओर से डीपीएस बोकारो में आयोजित तीन-दिवसीय राज्यस्तरीय बाल विज्ञान कांग्रेस शनिवार को उल्लासपूर्ण वातावरण में संपन्न हो गया। राष्ट्रीय विज्ञान प्रौद्योगिकी एवं संचार परिषद, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित इस कार्यक्रम में लगातार तीन दिनों तक विद्यालय परिसर विज्ञान और नवाचार के अनूठे प्रयोगों और संग्रह से लबरेज रहा। इसके जरिए विद्यार्थियों ने अपनी वैज्ञानिक व शोधपरक प्रतिभा का खुलकर प्रदर्शन किया और सभी की सराहना बटोरी। 'स्वास्थ्य और कल्याण के लिए पारिस्थितिकी तंत्र को समझना' विषय पर आधारित इस कांग्रेस में राज्य के 13 विभिन्न जिलों से आए 100 से अधिक प्रतिभागियों ने अलग-अलग समूहों में अपने प्रोजेक्ट प्रस्तुत किए और डीपीएस बोकारो शोध, वैज्ञानिक चेतना और नवोन्मेषता का अहम साक्षी बना रहा।

समापन समारोह के मुख्य अतिथि डीसी कुलदीप चौधरी थे। इस मौके पर विद्यालय की प्रधानाध्यापिका मनीषा शर्मा ने स्वागत भाषण दिया और छात्राओं ने स्वागत गीत व नृत्य प्रस्तुति से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। मौके पर साइंस फॉर सोसाइटी के झारखंड प्रदेश अध्यक्ष डॉ. अली इमाम खान ने विज्ञान और सृजन के संबंधों पर चर्चा करते हुए प्रतिभागियों के शोध-आधारित प्रोजेक्ट की सराहना की। इस क्रम में निर्णायक मंडल व आयोजन समिति के सभी पदाधिकारियों व सदस्यों को सम्मानित भी किया गया।

वहीं, प्रातःकालीन सत्र में मुख्य अतिथि बोकारो स्टील प्लांट के मुख्य महाप्रबंधक (यातायात) अनिमेष कुमार झा ने प्रोजेक्ट की प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इस अवसर पर विभिन्न जिलों से आए प्रतिभागियों के बीच प्रमाण-पत्र वितरित किया गया। उद्घाटन समारोह में स्वागत भाषण उपप्राचार्य अंजनी भूषण तथा अंत में धन्यवाद ज्ञापन सोसाइटी के स्टेट एकेडमिक कोऑर्डिनेटर राजेंद्र कुमार ने किया। इस अवसर पर सोसाइटी प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. एमपी नायक व जिला समन्वयक अरुण कुमार सहित आरके कर्ण, पीके झा, एसपी सिंह आदि, विभिन्न जिलों से आए प्रतिभागी, बच्चे उनके शिक्षक तथा निर्णायक मंडल के सदस्यों सहित बड़ी संख्या में शिक्षाविद उपस्थित थे।

इसके पूर्व, कार्यक्रम के दूसरे दिन विज्ञान के प्रचार-प्रसार तथा बच्चों में वैज्ञानिक जागरूकता के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए साइंस फॉर सोसाइटी की नई पहल के तहत होली क्रॉस स्कूल की प्राचार्या सिस्टर कमला पॉल, डीएवी पब्लिक स्कूल, सेक्टर- 6 के प्राचार्य एसके मिश्रा एवं डीपीएस बोकारो के प्राचार्य एएस गंगवार को डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम बेस्ट प्रिंसिपल अवार्ड से सम्मानित किया गया। जबकि, प्रातःबेला में प्रतिभागी बच्चों ने बैंड-ध्वनि के साथ विज्ञान जागरूकता रैली भी निकाली।

राष्ट्र स्तर के लिए चयनित 18 में से 10 विद्यार्थी बोकारो के

इस अवसर पर राष्ट्रस्तरीय बाल विज्ञान कांग्रेस को लेकर 18 प्रतिभागियों को चयनित किया गया। वे आगामी जनवरी माह में डीपीएस बोकारो में होनेवाली कार्यशाला में शामिल होंगे और उनमें से 12 अंतिम रूप से राष्ट्रीय कांग्रेस के लिए चुने जाएंगे। ग्रामीण जूनियर ग्रुप में बोकारो से शताक्षी व पायल महथा, पश्चिम सिंहभूम की मलिन सिंकू, दुमका की जूही प्रिया मुर्मू, ग्रामीण सीनियर में बोकारो से डॉली कुमारी व तरन्नुम गुलनाज, रांची की सूरी रानी, धनबाद के ओंकार वर्मा, जामताड़ा की अरिप्ता साहा, शहरी जूनियर ग्रुप में बोकारो से रिद्धि शर्मा व सक्षम झा, पश्चिम सिंहभूम के सौरभ लोहरा, देवघर से अभिज्ञान तथा सीनियर शहरी ग्रुप में बोकारो से अभिनीत शरण, अर्पण कुमार, रंजन भारती और मुकुंद कुमार तथा गिरिडीह से रौशन राज चयनित किए गए। वहीं, बाल अधिकार में राष्ट्रीय स्तर के लिए चयनित 16 प्रतिभागियों में से 8 अकेले बोकारो से हैं।

किसने क्या कहा

देश को उन्नति के शिखर पर पहुंचाएं

कुलदीप चौधरी, उपायुक्त - समापन समारोह के मुख्य अतिथि जिले के उपायुक्त कुलदीप चौधरी ने राज्य के विभिन्न जिलों से आए प्रतिभागियों की वैज्ञानिक रचनाधर्मिता को सराहा तथा और बेहतरी के साथ देश को उन्नति के शिखर पर पहुंचाने का आह्वान किया। उन्होंने बच्चों में वैज्ञानिक सोच विकसित करने की दिशा में इस तरह के आयोजन और इसमें डीपीएस बोकारो की भूमिका को सराहनीय बताया।

विज्ञान मानवता को उपहार

अनिमेष कुमार झा, सीजीएम (ट्रैफिक), बीएसएल- प्रोजेक्ट प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए विज्ञान को मानवता के लिए एक उपहार बताया। उन्होंने पारिस्थितिकी तंत्र को सुरक्षित बनाए रखने का संदेश दिया। उन्होंने डीपीएस बोकारो को जहां उत्कृष्टता का पर्याय बताया, वहीं इस तरह के आयोजन के लिए साइंस फॉर सोसाइटी, झारखंड के कार्यों की सराहना भी की।

असीम अवसर हैं, लाभ उठाएं

संजय कुमार, अधिशासी निदेशक (कार्मिक व प्रशासन), बीएसएल सह प्रो-वाइस चेयरमैन (डीपीएस बोकारो स्कूल मैनेजिंग कमेटी)- बच्चे देश के भविष्य हैं, जिनमें असीम क्षमता और उनके लिए अवसर भी असीम हैं। विद्यार्थी अपनी क्षमता को अंदर से निकालकर उसे निखारें और इन अवसरों का लाभ उठाएं। जब वे ऐसा करेंगे तो निश्चय ही अपने देश भारत का परचम पूरे विश्व में लहराएंगे।

विज्ञान व तकनीक दुनिया का भविष्य

एएस गंगवार, प्राचार्य, डीपीएस बोकारो सह आगेर्नाइजिंग प्रेसिडेंट- विज्ञान और तकनीक दुनिया का भविष्य है। उन्होंने उभरते वैज्ञानिकों को मंच प्रदान करने का यह राज्यस्तरीय अवसर डीपीएस बोकारो को मिलना गर्व का विषय है। उन्होंने बच्चों के सर्वांगीण विकास में डीपीएस बोकारो की प्रतिबद्धता भी व्यक्त की।

बढ़ाएंगे वैज्ञानिक गतिविधियां

राजेन्द्र कुमार, स्टेट एकेडमिक कोऑर्डिनेटर, साइंस फॉर सोसाइटी, झारखंड - हरेक बच्चा का प्रयास अनूठा है। कोई थोड़ा बेहतर है, तो इससे हताश होने की जरूरत नहीं है। बच्चों को हमेशा सीखते रहना चाहिए। उन्होंने सोसाइटी द्वारा भविष्य में अधिकाधिक बच्चों को वैज्ञानिक गतिविधियों से जोड़ने की भी बात कही।

वैज्ञानिक चेतना व शोध की प्रवृत्ति का विकास आवश्यक

डॉ. अली इमाम खान, अध्यक्ष साइंस फॉर सोसाइटी, झारखंड - सोसाइटी तत्कालीन बिहार के समय से ही वर्ष 1993 से बाल विज्ञान कांग्रेस का आयोजन कर रही है। इसका उद्देश्य यह है कि अपने देश के बच्चों में शोध की प्रवृत्ति का विकास कर उनमें वैज्ञानिक चेतना जागृत की जा सके। बच्चे स्कूली शिक्षा के पारंपरिक दायरे से अलग हटकर नवाचार के साथ शोध में शामिल हों और कुछ नया करें, इसका मकसद यही रहा है। सर्वे और प्रयोग के आधार पर इसमें रिसर्च एक्टिविटी केंद्र में होती है। खास बात यह है कि इसमें स्कूल की बाध्यता नहीं है।

बेहतरी सेक्टर-4 सिटी सेंटर में नवीनीकरण के बाद मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी ने किया उद्घाटन, छूट भी मिल रही

जोहार इंपोरियम... बोकारो का खादी भवन अब नए कलेवर में

भारत की अतुलनीय पहचान और गरिमा है खादी : बेसरा

संवाददाता

बोकारो : बोकारो का खादी भवन अब नए कलेवर में ढल चुका है। खादी वस्त्रों के जरिए स्वदेशीवाद का अलख जगाने को खादी भवन अब आधुनिक तरीके से यहां लोगों को अपनी सेवा देगा। नगर के सेक्टर-4 स्थित खादी भवन का बोकारो केन्द्र अब झारखंड राज्य खादी बोर्ड, झारखंड सरकार के उपक्रम नए स्वरूप में जोहार इम्पोरियम रूप ले चुका है। नवीनीकरण के उपरांत इस जोहार इम्पोरियम का उद्घाटन झारखंड राज्य खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड, रांची के मुख्य मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी (सीईओ) राखाल चन्द्र बेसरा (झाप्रसे) ने किया। आधुनिक सुविधाओं, बेहतर साज-सज्जा और संसाधनों से युक्त नवीनीकृत जोहार इम्पोरियम के शुभारंभ पर श्री बेसरा ने प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने अपनी बधाई व शुभकामनाएं देते हुए खादी कपड़ों की अहमियत पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि खादी भारत की एक अनूठी पहचान और गरिमा है। आज न सिर्फ भारत, बल्कि विदेशों में भी खादी कपड़ों की डिमांड है। यह लेटेस्ट फैशन के दौर में भी शामिल हो चुका है। खादी कपड़े न सिर्फ आरामदायक हैं, बल्कि सच्चे हिंदुस्तानी होने का अहसास भी कराता है।

मौके पर बोर्ड के वरीय प्रबंधक दुगानंद झा, खादी बोर्ड के प्रबंधक विभूति राय, खुर्शीद आलम, किशोर कुमार सिंह, खादी भवन, बोकारो केंद्र के प्रभारी राजेश कुमार झा, अनिल झा, नारायण कुमार, राहुल कुमार, पीके झा सहित शहर के कई गणमान्य लोग उपस्थित थे। स्थानीय केंद्र

प्रभारी राजेश झा ने बताया कि यहां पूर्व से ही खादी भवन में कपड़ों पर विशेष छूट दी जा रही है।

मस्ती की आग में रोजी-रोटी खाक

ये लापरवाही गलत है... बारातियों के पटाखे जला रहे लोगों की आजीविका

संवाददाता

बोकारो : शादी-ब्याह और खुशी के मौके पर आतिशबाजी आम बात है। लोग करते भी हैं। इन दिनों शादियों का दौर चल रहा है और आतिशबाजी का भी। बाराती नाचते-गाते, झूमते मस्ती में चूर हो जमकर पटाखे फोड़ रहे हैं। वे फोड़ें, इसमें कोई गलत बात नहीं। लेकिन, जब उनकी यह मस्ती किसी की जीवनभर की कमाई और रोजी-रोटी जलाकर खाक कर दे, तो यह हरगिज उचित नहीं ठहराया जा सकता। बोकारो में इन दिनों ऐसा ही हो रहा है। बारातियों की मस्ती की आग में लोगों की रोजी-रोटी के साधन जलकर खाक हो रहे हैं। बाराती में शामिल लोग ये नहीं सोच रहे कि उनके द्वारा छोड़े गए पटाखे फुटपाथ किनारे लगी छोटी-छोटी दुकानों के दुकानदारों की आजीविका जलाकर नष्ट कर दे रहे हैं। बाराती तो नाच-गाकर निकल जा रहे, लेकिन उसके पीछे छूट जाते हैं उन दुकानदारों के आंसू, जिन्होंने तिल-तिल कर पैसा जमाकर अपना व्यवसाय खड़ा किया और पटाखों की आग में उनके सारे अरमान जलकर खाक हो जा रहे। पिछले दिनों शहर के सेक्टर-1 स्थित श्रीराम मंदिर मार्केट के फुटपाथ की चार दुकानें पटाखों की चिंगारी की चपेट में आकर राख हो गईं और इसके अगले ही दिन सेक्टर-6 में शॉपिंग सेंटर के पास बनी आठ दुकानें छोड़े गए पटाखे की आग में जल गईं। इनमें सब्जी, स्नेक्स, भूंजा दुकान और इलेक्ट्रिक सामान की दुकानें शामिल थीं। दुकानदार गौतम कुमार, सतीश मोदक, निरंजन कुमार और विजय साह ने बताया कि रात को दुकान बंद करने के बाद अपने-अपने घर चले गए। रात में बगल की दुकान में सोने वाले दुकानदार ने फोन पर जानकारी दी कि उनके दुकान में आग लग गई है। घर से निकल कर दुकान पर पहुंचे, तो दुकान से आग की लपटें उठ रही थीं। अग्निशमन दस्ते ने आग को काबू किया और आसपास की और दुकानों को जलने से बचा लिया। आसपास के दुकानदारों ने बताया कि रात में उस रास्ते से बारात गुजर रही थी, जिसमें शामिल लोग पटाखा जला रहे थे। पटाखे की चिंगारी ही दुकान के ऊपर चली गई, जिस वजह से दुकान में लगे प्लास्टिक और बांस आग की चपेट में आ गए।

इसके अगले ही दिन सेक्टर-6 शॉपिंग सेंटर में आठ दुकानों के जलने से लगभग 20 लाख रुपए मूल्य की संपत्ति जलकर नष्ट हो गई। घटना की रात सेक्टर-6 इलाके में तीन बारात आई थी। बाराती पटाखे जला रहे थे। शॉपिंग सेंटर मोड़ से तीनों बरात अपने-अपने स्थान की ओर रवाना हो गए। उनमें से ही किसी ने जमकर दुकानों के पास आतिशबाजी की। वे आतिशबाजी के बाद वहां से चले गए, लेकिन पटाखे की चिंगारी दुकान के अंदर जा चुकी, जो आग बन गई। आजाद रुई दुकान में रखे करीब सात लाख के रुई, गद्दे से लेकर सभी तरह का मटेरियल चपेट में आ गए। वहीं मिथुन जूता दुकान, अर्जुन झाड़ू दुकान में रखे राशन की सामान, लक्ष्मी श्रृंगार दुकान, आशु महतो की साइकिल दुकान, अलकू महतो की सिलाई दुकान में रखे कपड़े, लेकर सिलाई मशीन, निवारण सैलून और राजकुमार की बैग दुकान पूरी तरह से जलकर राख हो गई। दुकानदार भी दौड़ते हुए रात में पहुंचे, लेकिन उनका एक भी सामान बच नहीं सका। सभी दुकानदारों ने सेक्टर-6 थाना में क्षतिपूर्ति की मांग को लेकर आवेदन जमा किया।

डीसी से मिले विधायक, मदद का आश्वासन

बोकारो विधायक बिरंची नारायण ने सेक्टर-6 में जली 8 दुकान के मालिकों से मुलाकात की और घटना का कारण बारातियों का पटाखा सामने आया। पीड़ित दुकानदारों ने कहा कि इस अगलगी में पूरे परिवार की रोजीरोटी पर संकट आ गया है। विधायक ने पूरी घटना को सुनकर बोकारो उपायुक्त से वार्ता की और अपनी ओर से हरसंभव मदद का आश्वासन दिया। दुकानदारों का कहना है कि दुकान प्लास्टिक, बांस, त्रिपाल, टिन के बने होते है। ऐसे में आग की छोटी सी चिंगारी उन्हें तबाह कर देती है। बारातियों को मना करने पर वे शराब के नशे में विवाद करते हैं। जिस तरह से लगातार दो दिन शहर में ऐसी घटना हुई, इसे लेकर जिला प्रशासन को निर्देश देना चाहिए कि घनी आबादी इलाके में आतिशबाजी बंद हो।

तकनीक बीएसएल में 500 किलोग्राम प्रतिदिन क्षमता वाले वेस्ट बायो-डाइजेस्टर का उद्घाटन

कैंटीन के कचरे से बनेगी बायोगैस

संवाददाता

बोकारो : सेल में मनाए जा रहे पर्यावरण माह के तहत पर्यावरण संरक्षण और स्थिरता के महत्व के बारे में जनसामान्य के बीच जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से बोकारो स्टील प्लांट द्वारा इस दौरान कई पहल की जा रही हैं। इस दिशा में बोकारो स्टील प्लांट में उत्पन्न होने वाले कैंटीन कचरे के उचित निपटान के लिए अधिशासी निदेशक (संकार्य) बीके तिवारी ने गुरुवार को अधिशासी निदेशक (संकार्य) कैंटीन के पास स्थापित 500 किलोग्राम प्रतिदिन क्षमता वाले बायो-डाइजेस्टर का उद्घाटन किया। इस अवसर पर अधिशासी निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन) संजय कुमार, अधिशासी निदेशक (परियोजना) सीआर महापात्रा, सीजीएम (सेवाएं) अनिल कुमार, सीजीएम (सीईडी) शालिग्राम सिंह, सीजीएम (प्रोजेक्ट्स), एन. रे, सीजीएम (ईएमडी और यूटिलिटीज) पीके बसाखिया, सीजीएम इंचार्ज (कार्मिक) पवन कुमार, सीजीएम (सी एंड ए) बी. सरतापे, सीजीएम (यांत्रिकी) वीके सिंह, महाप्रबंधक/पर्यावरण एवं सस्टेनेबिलिटी एनपी श्रीवास्तव, महाप्रबंधक (कार्मिक-संकार्य) नीना सिंह इत्यादि भी उपस्थित थे।

उल्लेखनीय है कि बायो-डाइजेस्टर बोकारो स्टील प्लांट के अंदर कैंटीनों से पूरे संयंत्र में उत्पन्न होने वाले कैंटीन कचरे को प्रोसेस करने के लिए स्थापित किया गया है। पुणे से मैसर्स झियोन वेस्ट मैंजर्स एलएलपी द्वारा आपूर्ति किए गए बायो-डाइजेस्टर प्लांट में खाद्य अपशिष्ट, सब्जियों के छिलके आदि जैसे जैविक कचरे के 500 किलोग्राम/दिन को प्रोसेस करने की क्षमता है और उत्पन्न होने वाली बायो-गैस का उपयोग अधिशासी निदेशक (संकार्य) कैंटीन में एलपीजी सिलेंडर के बदले खाना पकाने के लिए किया जा रहा है। बायो गैस संयंत्र से उत्पन्न होने वाले स्लरी का उपयोग संयंत्र के भीतर बगीचों में खाद के रूप में किया जा रहा है। बायो-डाइजेस्टर प्लांट परियोजना की शुरूआत कार्मिक विभाग द्वारा की गई थी। एनवायरनमेंट और सस्टेनेबिलिटी विभाग द्वारा समन्वित और परियोजना प्रभाग द्वारा निष्पादित किया गया है।

इस अवसर पर अधिशासी निदेशक (संकार्य) बीके तिवारी ने पर्यावरण, परियोजनाओं और कार्मिक विभाग की टीम को बधाई दी और प्लांट और टाउनशिप में सूखे और बायो-डिग्रेडेबल गीले कचरे के उचित पृथक्करण के लिए सभी को प्रोत्साहित किया। बता दें कि यह परियोजना 220 टन जीएचजी प्रति वर्ष से अधिक की कमी लाने में मदद करेगी, कैंटीन में प्रतिदिन एक वाणिज्यिक एलपीजी सिलेंडर के बदले इस्तेमाल की जा सकेगी और पूरे संयंत्र में बगीचों को जैविक खाद भी प्रदान करेगी। पर्यावरण और सस्टेनेबिलिटी से संबंधित बीएसएल की विभिन्न पहलों के कारण, बीएसएल को ग्रीनटेक फाउंडेशन द्वारा 2022 के दौरान "पर्यावरण संरक्षण" श्रेणी में ग्रीनटेक पर्यावरण उत्कृष्टता पुरस्कार का विजेता घोषित किया गया है।

हफ्ते की हलचल

बीटीपीएस मंत्रालय पुरस्कार से चौथी बार सम्मानित

बोकारो थर्मल : पूर्व तथा पूर्वोत्तर क्षेत्रों के तेरह राज्यों का संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह गुरुवार को सीएसआईआर खनिज एवं पदार्थ प्रौद्योगिकी संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित किया गया। समारोह में डीवीसी बीटीपीएस बोकारो थर्मल को द्वितीय राजभाषा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। समारोह के बतौर अध्यक्ष केंद्रीय गृह राज्यमंत्री अजय कुमार मिश्रा ने डीवीसी, बीटीपीएस के पीसीई सह एचओपी सुशांत सन्निग्रही को राजभाषा शील्ड तथा आलोच्य अवधि के राजभाषा अधिकारी इस्माईल मियां को राजभाषा प्रमाण-पत्र प्रदान कर पुरस्कृत किया। समारोह के मुख्य अतिथि उपाध्यक्ष, संसदीय राजभाषा समिति भर्तृहरि महताब व संयुक्त सचिव (राजभाषा) डॉ.मीनाक्षी जौली मौजूद थीं। भारत सरकार के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वी क्षेत्र) के क्षेत्राधिकार के अंतर्गत ह्यकह्य क्षेत्र (बिहार, झारखंड व अंडमान निकोबार द्वीप समूह) में राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु वर्ष 2020-21 के लिए बीटीपीएस को उक्त मंत्रालय पुरस्कार से नवाजा गया है। इसके पहले तीन बार वर्ष 2016-17, 2018-19 एवं 2019-20 में भी डीवीसी बीटीपीएस को पुरस्कृत किया जा चुका है। चौथी बार पुरस्कार प्राप्त होने पर बीटीपीएस के सीई आरआर शर्मा, सुब्रत गांगुली व एसएन प्रसाद, अपर निदेशक सह डीजीएम नीरज सिन्हा सहित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बेहद खुशी जाहिर की है।

रोटरी चास ने सदर अस्पताल में 100 कंबल दिए

बोकारो : रोटरी चास की ओर से गुरुवार को सदर अस्पताल बोकारो को 100 कंबल उपलब्ध कराया गया। रोटरी चास के संस्थापक अध्यक्ष संजय बैद ने बताया कि सदर अस्पताल के मरीजों को हो रही परेशानी को देखते हुए रोटरी चास नें दान स्वरूप 100 कंबल सदर अस्पताल प्रबंधन को उपलब्ध कराया है। बैद ने कहा कि जरूरत पड़ने पर और कंबल उपलब्ध करा दिया जाएगा। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित चास अनुमंडल पदाधिकारी दिलीप सिंह शेखावत ने कहा कि मरीजों को ठंड से बचाव के लिए रोटरी चास ने कंबल दान करने का नेक कार्य किया है। इसके लिए श्री शेखावत ने रोटरी चास की सराहना की और कहा कि जरूरतमंदों की सेवा से बढ़कर कुछ सेवा नहीं। यही सच्ची मानवता है। सदर अस्पताल के उपाधीक्षक डॉ. बीपी गुप्ता ने कहा कि रोटरी चास द्वारा सदर अस्पताल को प्राप्त कंबल से मरीजों को राहत मिलेगी। रोटरी के हरबंस सिंह सलूजा ने कहा की सेवा ही रोटरी का लक्ष्य है। रोटरी चास की सचिव पूजा बैद ने बताया कि सामाजिक सरोकार से जुड़े कार्य में रोटरी चास ने सदैव अपना हाथ आगे बढ़ाया है। पूजा ने कहा कि आगे और भी रोटरी चास द्वारा कंबल वितरण के कार्यक्रम किये जाएंगे। मौके पर कुमार अमरदीप, विपिन अग्रवाल, मनोज चौधरी, विनोद चोपड़ा, डॉ. संजीव कुमार, धनेश बंका, मनजीत सिंह आदि मौजूद रहे।

लव जिहाद का शिकार होने से बची बोकारो की बेटी

बोकारो : झारखंड में लव जिहाद के मामले लगातार सामने आ रहे हैं। इसी कड़ी में एक मामला बोकारो के हरला थाना क्षेत्र से सामने आया, जहां एक बेटी की जिंदगी तबाह होने से बच गई। एक नाबालिग लड़की से धर्म बदल कर आरोपी युवक शादी करने का प्रयास कर रहा था। वह शादी के मंच पर वह तैयार हो बैठा था, लेकिन उससे पहले ही उसके दूसरे मजहब के होने की बात सामने आई, जिसके बाद युवक मौके से हो गया। घटना के बाद पुलिस ने मुस्लिम युवक के कार को जब्त कर लिया है। कार से पुलिस की वर्दी सहित अन्य सामान बरामद किये गये। दरअसल, युवक पुलिस की वर्दी पहन कर युवती के घरवालों को अपने झांसे में लिया और बीती रात वह शादी करने पहुंचा था। शादी से पहले ही हरला थाना पुलिस मौके पर पहुंची तो दूल्हा फरार हो गया। पुलिस ने घरवालों को बताया कि युवक पूर्व में चास थाने के एक मामले में जेल जा चुका है और वह इसी तरह झांसा देने का काम करता है। हरला थाना क्षेत्र के कुम्हार पड़ा का रहने वाला गरीब परिवार आरोपी युवक के झांसे में आ गया।

नगर विकास समिति का पुनर्गठन, अभय फिर बने अध्यक्ष

बोकारो : स्वयंसेवी संगठन नगर विकास समिति के आगामी कार्यकाल के लिए मार्गदर्शन समिति एवं कार्यकारिणी का पुनर्गठन किया गया। इसमें अभय कुमार मुन्ना एक बार फिर अध्यक्ष बनाए गए। संगठन की मार्गदर्शक समिति में मनोज कुमार - संरक्षक तथा सुरेंद्र प्रसाद सिन्हा, शिव कुमार सिंह, कौशल किशोर, बाल कृष्णा कुमार, अशोक जगनानी, राकेश कुमार मधु, विक्रम महतो, कुमार जितेंद्र सिंह व अरविंदर सिंह भाटिया संरक्षक सदस्य बनाए गए। वहीं, कार्यकारिणी समिति में अभय कुमार मुन्ना अध्यक्ष, सुबोध कुमार सिंह उपाध्यक्ष, राम भजन सिंह, गौरी शंकर सिंह, ओम प्रकाश पांडेय व लालमुनि उपाध्यक्ष, अतीश कुमार सिंह संगठन महासचिव, शिव कुमार श्रीवास्तव व सुनील सिंह महासचिव, नरोत्तम झा, राजीव रंजन सिन्हा, रामकिंकर माहथा, साधु महतो व दयाल बाउरी सचिव, विनोद चौधरी कोषाध्यक्ष, रंजीत कुमार (अधिवक्ता) कानूनी परामर्शदाता तथा डॉ. सूर्यमणि कुमार चिकित्सीय परामर्शदाता बनाए गए हैं। समिति के अध्यक्ष अभय कुमार मुन्ना ने कहा कि समिति के पुनर्गठन में समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपने अपने स्तर से किए जा रहे कार्य में अग्रणी भूमिका निभाने वाले समाजसेवियों को सम्मिलित किया गया है। सभी पदाधिकारी एवं सदस्यगण मिलकर समिति के उद्देश्यों के अनुकूल आमजन तक शासन-प्रशासन के द्वारा संचालित योजनाओं को पहुंचाने के लिए सतत प्रयत्नशील रहेंगे।

बिहार के कृषि मंत्री ने कहा- राज्य में सभी संसाधान हैं मौजूद

झारखंड में कृषि को दिया जा सकता है बड़े उद्योग का रूप : सर्वजीत कुमार

संवाददाता
रामगढ़ : बिहार के कृषि मंत्री सर्वजीत कुमार अपने झारखंड के दौरे के क्रम में अपने पुराने परिचित कुज्जू स्थित अनिल मोदी के आवास पहुंचे। वहीं, उनके पुराने परिचित बेरमो के झामुमो नेता सह अखिल भारतीय अग्रवाल कल्याण महासभा के प्रदेश अध्यक्ष अनिल अग्रवाल से भी मुलाकात हुई। श्री अग्रवाल ने मंत्री को पुष्पगुच्छ देकर अभिवादन किया।

यहां उन्होंने झारखंड के कृषि-पद्धति की तकनीक को समझा। कई स्थानीय कृषकों से बातें भी की। उन्होंने कहा कि झारखंड में भी कृषि को एक बड़े उद्योग के रूप में विकसित करने के लिए कई स्रोत हैं। स्थानीय कृषकों को प्रशिक्षित कर विशेष तकनीक के माध्यम से खेती कराई जाय, तो खनिज संपदाओं के साथ-साथ यह राज्य कृषि में भी उद्योग का स्थान प्राप्त कर लेगी।

बिहार में बड़ा रोडमैप

श्री कुमार ने बताया कि बिहार राज्य सरकार की ओर से कृषि को लेकर चौथा रोडमैप तैयार किया जा रहा है। इसके जरिए लगातार जलवायु परिवर्तन में किसानों की परेशानी को दूर करने के लिए गेहूं व धान के उत्पादन के साथ अन्य फसल दलहन, तिलहन व अधिकाधिक आय बढ़ाने वाली फसल को बढ़ावा दिया जाएगा। बेमौसम बारिश में अधिक उत्पादन वाली फसल वह कम पानी में अधिक उपज देने वाली फसल को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसे लेकर लगातार जागरूकता अभियान भी चलाया जा रहा है। मौके पर किशन अग्रवाल सहित कई लोग उपस्थित रहे।

जनता को केवल भरमाने वाली है खातियानी जोहार यात्रा : डॉ. महतो

गोमिया विधायक ने सीएम की मुहिम पर उठाए सवाल, कहा- बस छलावा करना जानते हैं हेमंत

संवाददाता
बोकारो : आजसू पार्टी के केंद्रीय महासचिव व गोमिया विधायक डॉ. लंबोदर महतो ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की खतियानी जोहार यात्रा पर सवाल खड़ा किया है। उन्होंने कहा कि यह यात्रा किस बात के लिए है और इस यात्रा में किस बात का ढोल पीटा जा रहा है, यह उनके एवं राज्य की जनता के समझ से परे है। जिस मुख्यमंत्री ने 1932 खतियान आधारित स्थानीय नीति व ओबीसी आरक्षण को झारखंड में लागू नहीं किया तो यह यात्रा क्या मतलब है। यह यात्रा सिर्फ और सिर्फ राज्य की जनता को भरमाने और ठगने अलावा कुछ भी नहीं है।

उन्होंने कहा कि बेहतर तो यह होता कि मुख्यमंत्री 1932 खतियान आधारित स्थानीय नीति और ओबीसी आरक्षण को लागू करने के बाद राज्य भर की धन्यवाद, आभार व खतियानी के नाम पर यात्रा करते तो राज्य की जनता भी उन्हें गले लगाती। लेकिन चल रही यात्रा सिर्फ और सिर्फ भटकाने, लटकाने व बरगलाने का है और इस बात को राज्य की जनता को भी अच्छी तरह समझ रही है। उन्होंने कहा कि दरअसल मंत्री मुख्यमंत्री की नीति और नीयत में खोट है और और सरकार की मंशा इसे लागू करने की नहीं है, बल्कि इसके नाम पर अपना उल्लू सीधा करना है। हालांकि, राज्य की जनता इनके झांसे में आने वाली नहीं है। समय आने पर इनको राज्य की जनता जबरदस्त तरीके से सबक सिखाएगी।

गुलामी मानसिकता ने किया अंधविश्वास का बीजारोपण : प्रो. प्रेम

दरभंगा : राष्ट्रीय रसायन दिवस 2022 के अवसर पर प्राचीन भारत में विज्ञानकल्पित कथा अथवा वास्तविकता विषय पर एक सेमिनार सह प्रयोग प्रदर्शन का आयोजन ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के विश्वविद्यालय रसायन विज्ञान विभाग में किया गया। विषय प्रवेश कराते हुए विभागाध्यक्ष प्रोफेसर प्रेम मोहन मिश्र ने कहा कि प्राचीन भारत में विज्ञान का ज्ञान बहुत ही विकसित था। सिंधु घाटी सभ्यता के उत्खनन से उस समय के वैज्ञानिक ज्ञान का पता चलता है। कोणार्क के मंदिर, दिल्ली के महरौली के लौह स्तंभ भी इसके साक्षी हैं। उन्होंने वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त, नागार्जुन, भास्कर, आर्यभट्ट ,चरक, सुश्रुत ,बोधायन आदि वैज्ञानिकों के अवदानों की चर्चा करते हुए कहा कि गणित, खगोल विज्ञान चिकित्सा, रसायन एवं धातु कर्म जैसे विषयों में भारतीय ज्ञान के कारण ही इसे विश्वगुरु माना जाता था। विदेशी आक्रमण एवं गुलामी के कारण हमारी वह वैज्ञानिक सोच समाप्त कर अंधविश्वास की धारणा का बीजारोपण कर दिया गया। आज की पीढ़ी मझधार में है। वह विज्ञान के आविष्कारों का उपयोग भी कर रहा है, साथ ही रूढ़िवादी विचारों को मन में संजोकर रखे हुए हैं। आज हम विज्ञान के दिए हुए कार पर चलकर बिल्ली के रास्ता काटने को अशुभ मानने का पूर्णतया अवैज्ञानिक विचार भी रखते हैं। उन्होंने नए बच्चों को वैज्ञानिक चेतना विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता कोलकाता से आए विज्ञान संचालक चंचल बोस ने विस्तार से समाज में फैले अंधविश्वास की कई उदाहरणों से व्याख्या की। उन्होंने वैज्ञानिक तकनीक का उपयोग कर हाथ की सफाई दिखाकर लोगों को गुमराह करने ठगों से सावधान रहने की अपील की। उन्होंने पानी से दीए जलाना, मुंह में आग रखना, सादा कागज पर अपने-आप फोटो बनाना जैसे कई करतब दिखाकर उपस्थित प्रतिभागियों का मन मोह लिया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे जंतु विज्ञान विभाग के वरीय प्राचार्य मो. नेहाल ने जंतु विज्ञान सिद्धांत के आधार पर मानसिक संरचना का वर्णन कर विज्ञान एवं अंधविश्वास के अंतर को समझाया। अंत में वक्ताओं ने प्रतिभागी छात्रों के कई प्रश्नों का उत्तर देकर संतुष्ट किया। कार्यक्रम का संचालन एवं अतिथियों का स्वागत प्रो. कुशेश्वर यादव ने किया उन्होंने भी अपने कई अनुभवों को साझा किया। धन्यवाद ज्ञापन विभागीय शिक्षक डॉ. विकास कुमार सोनू ने किया। ब्रेकथ्रू साइंस सोसायटी के संयोजक मुजोहिद आजम ने सफल संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम में विभिन्न महाविद्यालयों के शिक्षक छात्रों के अलावा कई स्कूली छात्र-छात्राओं ने भी भाग लिया।

कोहरे की चादर में लिपटे गांव, बढ़ी ठंड

दरभंगा : जिले में ठंड ने अब अपना रंग दिखाना शुरू कर दिया है। इन दिनों जाले थाना क्षेत्र अंतर्गत खड़का बसंत और आसपास के गांव घने कोहरे की चादर में लिपट चुके हैं। सुबह के 9 बजे तक चारों तरफ धुंध ही धुंध नजर आ रहा है और ठंड के सथ कनकनी का भी अहसास हो रहा है। लगभग 20 मीटर तक ही विजिबलिटी रह गई है। इसके कारण वाहनों की आवाजाही प्रभावित हो रही है। लोग जाड़े से बचाव के लिए अलाव का सहारा ले रहे हैं। शाम ढलने के साथ ही दलानों अलाव और लोगों की जमघट लगने लगी है। आनेवाले दिनों में ठंड में और बढोतरी होने के आसार हैं।

पुपरी में नगर परिषद चुनाव 18 दिसंबर को, वोट की खातिर घर-घर दस्तक दे रहे प्रत्याशी

पुपरी : पुपरी में नगर परिषद चुनाव को लेकर इन दिनों अब सरगर्मी अपने चरम पर है। प्रत्याशी वोट की खातिर येन-केन-प्रकारेण मतदाताओं को रिझाने की कोशिशों में लग गए हैं। वे वोटरों के घर-घर पहुंचकर दस्तक दे रहे हैं। हर कोई खुद को जनता का सच्चा हितैषी बताते हुए जनता का साथ मांगता फिर रहा है। गौरतलब है कि बिहार में 18 दिसंबर को पहले चरण का चुनाव कराया जाएगा, जिसकी मतगणना 20 दिसंबर को होगी। वही, दूसरे चरण की वोटिंग 28 दिसंबर को की जाएगी और उसकी काउंटिंग 30 दिसंबर को की जाएगी। दो चरणों में 224 नगरपालिका का चुनाव होना है। इनमें 17 नगर निगम, 70 नगर परिषद, और 137 नगर पंचायत शामिल हैं। इनमें कुल एक करोड़ 14 लाख 52 हजार 759 मतदाता हिस्सा लेंगे। नोटिफिकेशन के साथ ही राज्य के शहरी क्षेत्रों में आचार संहिता लागू हो गई है। इसके अलावा पटना, बक्सर, नालंदा, गोपालगंज, मुजफ्फरपुर, पश्चिम चंपारण, शिवहर, दरभंगा, मधुबनी, मुंगेर, लखीसराय, जमुई, सहरसा और किशनगंज के 24 नगरपालिका में तीसरे चरण में चुनाव कराए जाएंगे।

जीवन जीने की कला है संघर्ष

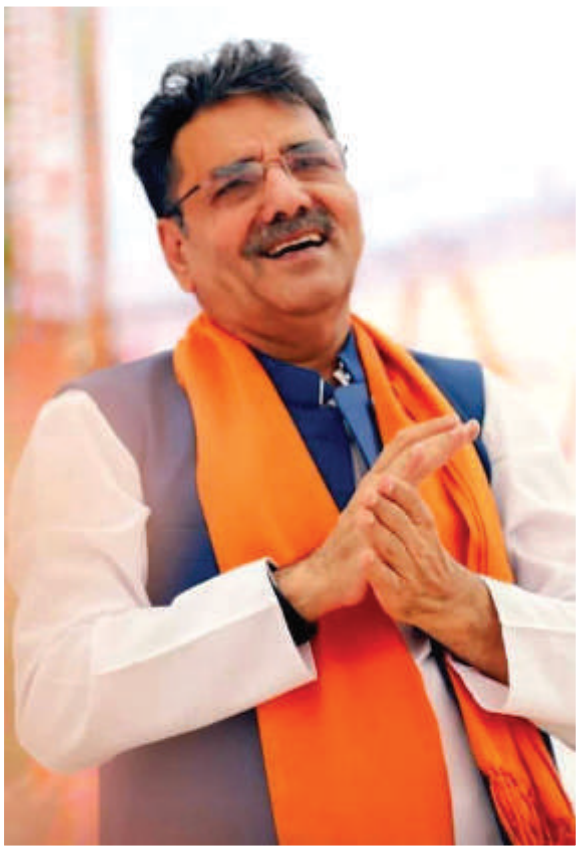

- गुरुदेव श्री नंदकिशोर श्रीमाली-

जीवन एक संघर्ष है या संघर्ष ही जीवन, दोनों एक ही बात है जिन्दगी जीने के लिए संघर्ष करना ही पड़ता है और जो संघर्ष करता है, उसे ही जिन्दगी का मजा आता है। राह संघर्ष की जो चलता है, वही संसार को बदलता है। जिसने रातों से जंग जीती है, सूरज बनकर वही तो निकलता है। संघर्ष के साथ एक नकारात्मक भाव जुड़ गया है और संघर्ष को कष्ट मान लिया गया है, जो झेलना ही पड़ता है। परंतु वास्तव में तो संघर्ष कष्ट या दुख से भिन्न है, क्योंकि संघर्ष तो किया जाता है और दुख आपके मन का भाव है। सब कुछ होने पर भी कोई दुखी हो सकता है और किसी को संघर्ष में भी आनंद आता है। विश्वास करना कठिन लग रहा है क्या आपको? तो कभी खिलाड़ियों को खेलते हुए देखिए, हार जीत के लिए कैसे एंड़ी चोटी का जोर लगाते हैं! भांति-भांति की रणनीतियां अपनाते हैं, पर उस संघर्ष में कष्ट झेलने जैसा भाव नहीं होता है। अगर कुछ होता है तो खेल के प्रति जोश और जीतने का जज्बा। पर अगर हार मिल जाए तो खिलाड़ी मायूस नहीं होते हैं, वरन् दुगुने उत्साह के साथ दूसरा मैच खेलने निकल पड़ते हैं। जिन्दगी की सबसे बड़ी खासियत है कि इसे कितनी भी गंभीरता से जिया जाए, जिंदा तो कोई निकलता नहीं है। जब से हम जन्म लेते हैं, प्रत्येक क्षण हम मृत्यु के नजदीक जा रहे हैं और उस मृत्यु के मुख से जीवन को जीत लेने की कला को ही संघर्ष कहा जाता है। सं+घर्ष, संघर्ष का शाब्दिक अर्थ है- घर्षण, घिसना, पिसना।अब 'घिसने' का भाव तो कष्टप्रद मालूम पड़ता है, कुछ ऐसी भावना आती है मन में, मानों- 'सुख भरे दिन बीते रे भैया अब दुख आयो रे' पर क्या संघर्ष ऐसा होता है? संघर्ष कठिन होता है, पर नामुमकिन नहीं। जिन्दगी में उतार-चढ़ाव चलते रहते हैं। एक रास्ता बंद होता है, तभी तो दूसरा खुलता है। इसलिए संघर्ष पुराने के विलय का और नए के उदय का समय होता है। बिना संघर्ष के जिन्दगी में स्वाद नहीं आता है, क्योंकि सफलता जब बगैर तपे मिलती है, तो उसके लिए आपके मन में इज्जत थोड़ी कम हो जाती है।

क्यों आवश्यक है संघर्ष?

बिना संघर्ष के इंसान चमक नहीं सकता
जो जलेगा उसी दिए में उजाला होगा।

संघर्ष एक प्रकार का तप है और इसके कारण ही हमें समस्या से जूझने की शक्ति मिलती है। जीवन-पथ हमेशा समतल नहीं हो सकता, यह तो उबड़-खाबड़ होता है। इसमें मुश्किलें आती हैं और कई बार समस्याएं बहुत बड़ी लगती हैं। सूरज, जो सारी दुनिया में उजाला करता है, ग्रहण काल में उसे भी राहु डस लेता है। तो क्या ग्रहण चिरकाल के लिए आता है? नहीं! कुछ क्षणों, मिनटों का होता है और ग्रहण के अंधेरे को चीरकर सूरज बाहर निकल आता है।

संघर्ष तो होगा ही

ठीक इसी प्रकार संघर्ष काल में समस्याएं आती हैं, कई बार ऐसा भी होता है कि हम पर समस्याएं हावी होने लगती हैं और कई बार मन में यह विचार आता है कि 'मेरे साथ ही ऐसा क्यों होता है'? ऐसी सोच आपको निराशा की गर्त में ढ़केल सकती है। जबकि जो संघर्ष होता है, वह आपके अच्छे के लिए ही होता है। उस क्षण ऐसा लग सकता है कि हमारे साथ गलत हो रहा है, पर यह सच नहीं है। संघर्ष प्रकृति का नियम है, इसलिए ना तो इससे भागा जा सकता है और ना ही मुंह छुपाकर बैठा जा सकता है। जीवन में संघर्ष हमें धीरता, सहनशीलता, सब्र, क्षमा और संतुष्टि सिखाता है। ये भाव कभी और कहीं भी आपके काम आ जाएंगे, बहुत काम आएंगे, पर इन गुणों को अपनाने के लिए तपना जरूरी है और तपने के लिए संघर्ष जरूरी है।

प्रकृति संघर्ष का स्वरूप

प्रकृति का विकास चुनौतियों द्वारा होता है, पर प्रकृति इन चुनौतियों से अपना स्वभाव नहीं बदल देती है। ग्रहण के भय से सूरज निकलना बंद नहीं कर देता है, आंधी-तूफानों के डर से बीज अंकुरित होना नहीं छोड़ देता, तो फिर आप क्यों संघर्ष और असफलता से अपना मस्त-मौलापन छोड़ देते हैं? उस प्रसन्नता से अलग हो जाते हैं, जो आपका स्वभाव है?

जिन देशों में बहुत बारिश होती है, जैसे- इंडोनेशिया, मलेशिया, वहां पर थोड़ी सी भी आंधी आती है तो कई हजार पेड़ जड़ से ही उखड़ जाते हैं, क्योंकि उनकी जड़ें जमीन के ऊपरी भाग में (सतही) ही रहती हैं, उन जड़ों की जमीन के साथ पकड़ कमजोर होती है और थोड़ी सी भी आंधी उस पेड़ को गिरा देती है। ये पेड़ न ज्यादा आंधी सहन कर सकते हैं, न ज्यादा तूफान और ना ज्यादा वर्षा, जड़ से ही उखड़ जाते हैं, धराशायी हो जाते हैं।

दूसरी तरफ भारत या उस जैसे देशों में देखें, जहां कम बारिश होती है, उस विपरीत वातावरण में भी पेड़ भारी से भारी आंधी में भी टिके रहते हैं, क्योंकि इन पेड़ों की जड़ें जमीन में बहुत गहराई तक चली जाती हैं। जमीन पर इनकी पकड़ मजबूत होती है। उनकी जड़ों को लगातार संघर्ष कर गहरे जाकर ही जमीन की पकड़ प्राप्त होती है, इसलिए बड़ी से बड़ी आंधियां और तूफान भी इन्हें गिरा नहीं पाते हैं। हमने कई ऐसे पेड़ों को देखा है, जो कि चार-चार सौ साल पुराने हैं, लेकिन उन पेड़ों को देखें तो आपको अनुभव होगा कि इन पेड़ों की जड़ें बहुत गहराई के साथ जमीन को पकड़े हुए होती हैं। इनका तना भी बहुत चौड़ा होता है और जड़ तो सौ-सौ, दो-दो सौ फुट गहरी चारों दिशाओं में सौ फीट फैली हुई रहती हैं, इस कारण आंधियां इन पेड़ों को गिरा नहीं पाती हैं।

समस्या पहेली तो संघर्ष समाधान

इसलिए संघर्ष को कष्ट का पर्याय नहीं समझें, बल्कि एक पहेली समझें, जिसमें जोड़-तोड़ करने की जरूरत है और समस्या सुलझ जाएगी। इसी जोड़-तोड़ को तो जुगाड़ कहते हैं और यह जुगाड़ आपको सिखाता है कि समस्या का सामना कैसे किया जाए? अब जिन्दगी में हर समस्या सुलझाने के लिए तो तलवारबाजी जरूरी नहीं है, पर हर समस्या का समाधान शांत मन से उसे सुलझाने में लगे रहने (संघर्षरत) से प्राप्त हो जाता है। जब समय कठिन हो, तब धैर्य का 'डबल डोज' लें और मस्तिष्क के और नियंत्रित प्रश्नों को विराम (Pause) पर डाल दें। विस्तार में प्लानिंग करने की बजाय वर्तमान में जिएं- आज अगर अच्छा रहा तो कल भी अच्छा रहेगा।

मस्तिष्क में चल रहे द्वन्द्व को विराम दें, क्योंकि उसमें विरोधाभास पलता है। बच्चा जब बड़ता है, तो माता-पिता प्रसन्न होते हैं पर उसी बढ़ने की चरमोत्कर्ष अवस्था बुढ़ापा से हर कोई आशंकित है, वह किसी को नहीं चाहिए। उसी प्रकार विकास तो सबको चाहिए, पर संघर्ष नहीं। यह असंभव है, क्योंकि पेड़ जितना ऊंचा हो उठता है, उतना ही आंधी का तेज (वेग) सहन करता है। इसका अर्थ क्या है? कि हम जीवन में जितना ऊंचा उठने का प्रयास करेंगे, उतना ही संघर्ष ज्यादा करना पड़ेगा। लेकिन इसके लिए आवश्यक है कि हमारी जड़ें मजबूत हों। हमारी संघर्ष क्षमता बड़ी हो। संघर्ष का अर्थ ही है, घर्षण। यह घर्षण तो विरोधी शक्तियों के साथ ही होगा और जब विरोधी शक्तियों के साथ संघर्ष करना है तो मुकाबला ही करेंगे। इसी मुकाबले से, इसी संघर्ष से हमें धीरता, सहनशीलता और संतुष्टि प्राप्त होगी।

बिना संघर्ष किए आप जीवन में कभी भी संतुष्ट नहीं हो सकते हैं। संघर्ष के बिना व्यक्ति सदैव बिना नाखुश रहता है और व्यक्ति संघर्ष के द्वारा जो सफलता प्राप्त करता है, वह अपनी सफलता को स्वीकार कर स्वयं संतुष्ट होता है।

'वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो...!'

(साभार : निखिल मंत्र विज्ञान)

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ) - स्वास्थ्य का ख्याल रखें। थोड़ी परेशानी हो सकती है। जीवन सुखमय एवं आनन्ददायक गुजरेगा। बुरे कर्म वाले लोगों से दूरी बनाएं। धनागम के योग बनेंगे। वाणी पर संयम रखें। व्यर्थ के झगड़े-विवाद से दूर रहें। रोजगार के योग बनेंगे। शत्रु परास्त होंगे।

वृष (ई उ ए ओ वा वी वू वे वो) - स्वास्थ्य में थोड़ी परेशानी हो सकती है। रुके हुए धन के प्राप्ति के योग बनेंगे। प्रतिष्ठित लोगों से लाभ प्राप्त हो सकता है। कार्यों की सफलता में देर होगी। दाम्पत्य जीवन में थोड़ी कड़वाहट होगी।

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा) - स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें। धनागम के योग बनेंगे। राज्याधिकारियों से मुलाकात होगी। चल सम्पति को लेकर वाद-विवाद हो सकती है। शत्रुओं पर विजय। कर्तव्य निर्वहन में सावधानी बरतें।

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो) - सप्ताह के शुरू में स्वास्थ्य थोड़ा बिगड़ेगा, लेकिन सप्ताहांत तक सुधार होंगे। स्त्री से रिश्ते बिगड़ेंगे, विवाद से दूर रहें। शत्रुओं पर विजय। बुद्धि में भ्रम पैदा होगा। पति या पत्नी के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ सकता है।

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे) - सामाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ोतरी होगी। लाभ में भी बढ़ोतरी होगी। वाणी पर संयम रखें। शत्रुओं पर विजय होगी। अच्छा स्वास्थ्य एवं मानसिक सुख प्राप्त करेंगे।

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो) - इस सप्ताह मन प्रसन्न रहेगा। पदोन्नति या व्यवसाय में वृद्धि होगी। विद्यार्थीवर्ग को सफलता प्राप्त होंगे। चल सम्पति सम्बन्धी निर्णय सिच विचार कर लें। शत्रुओं पर आसानी से विजय प्राप्त होगी। मनोकामनाएं पूर्ण हो सकती है।

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते) - स्वास्थ्य में सुधार होंगे। धन की प्राप्ति के योग बनेंगे। सुख आनन्द की प्राप्ति हो सकते हैं। मनोरंजन की योजनाएं बनेंगी। नेत्र कष्ट हो सकते हैं। वाहनादि के योग बनेंगे।

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो या यी यू) - स्वास्थ्य में थोड़ी सुस्ती महसूस करेंगे। स्वजनों से मनमुटाव होंगे। संगीत से लगाव बढ़ेंगे। वाणी पर संयम रखें। मानसिक चिंताएं बढ़ सकती है। धर्म कार्यों में रूचि बढ़ेगी।

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे) - मन चंचलता से भरा होगा। निर्णय लेने में असावधानी नही बरतें। साहस में बढ़ोतरी होगी। वाणी पर संयम रखें। धन की प्राप्ति हो सकती है। विद्या की बढ़ोतरी होगी। स्त्री सुख मिलेगा। गायन वादन में रुचि बढ़ेगी।

मकर (भो जा जी खी खू खे खो गा गी) - स्वास्थ्य में सुधार। शत्रुओं का नाश होगा। मित्रों से सहायता मिलेगी। लोहे, कोयला आदि से व्यावसायिक लाभ मिलेगा। पदोन्नति होगी। व्यय अधिक हो सकते हैं।

कुम्भ (गू गे गो सा सी सू से सो दा) - स्वास्थ्य पर ध्यान दें। नेत्र सम्बन्धी समस्या हो सकती है। पदोन्नति के योग बनेंगे। पिता से धन लाभ। भोजन से अरुचि हो सकती हैं। विद्यार्थी मेहनत करें तो ही सफलता प्राप्त होगी।

मीन (दी दू थ झ दे दो चा ची) - स्वास्थ्य पर मौसम का बुरा प्रभाव पड़ेगा। जल सम्बन्धी व्यवसाय से लाभ प्राप्त होंगे। मित्रों और पारिवारिक सदस्यों से मुलाकात होगी।

बालकों में जमशेदपुर, तो बालिका वर्ग में नवादा को खिताबी जीत

चिन्मय विद्यालय में आयोजित तीनदिवसीय पूर्वी क्षेत्री हैंडबॉल प्रतियोगिता संपन्न, विभिन्न राज्यों का रहा जुटान

संवाददाता

बोकारो : बोकारो स्थित चिन्मय विद्यालय में चल रहा तीन दिवसीय सीबीएसई हैंडबॉल टूर्नामेंट (पूर्वी क्षेत्र)- 2022 उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हो गया। बालक वर्ग में दो सेमीफाइनल और एक फाइनल मैच खेला गया, जबकि बालिका वर्ग में फाइनल हुआ। बालक वर्ग में फाइनल आरएमएस स्कूल, जमशेदपुर एवं सेठ एमआर, जयपुरिया स्कूल, वाराणसी में खिताबी भिड़त हुई। इसमें आरएमएस स्कूल, जमशेदपुर ने सेठ एमआर जयपुरिया को 21-10 से हराकर विजेता का खिताब प्राप्त किया। वहीं, बालिका वर्ग में मार्डन इंग्लिश स्कूल, नवादा ने विजयश्री हासिल की। बालक वर्ग (19 वर्ष आयु तक) में आरएमएस हाई स्कूल, जमशेदपुर विजेता, तो सेठ एमआर जयपुरिया स्कूल, बाबतपुर, वाराणसी दूसरे स्थान पर रहा। सनबीम स्कूल, वरुणा वाराणसी एवं सनबीम स्कूल, बलिया संयुक्त रुप से तीसरा स्थान प्राप्त किया।

बालिका वर्ग (19 वर्ष आयु तक) में मार्डन इंग्लिश स्कूल, नवादा विजेता रहा, तो आर्मी पब्लिक स्कूल, कानपुर दूसरे और संत मैरीज स्कूल, जमशेदपुर व आइंस्टाइन पब्लिक स्कूल, बाबतपुर - संयुक्त रूप से तीसरे स्थान पर रहे। प्रतियोगिता के तीन दिनों में कुल 43 मैच खेले गए और सभी अपने-आप में काफी रोमांचक रहे।

फाइनल मैच की समाप्ति के बाद संगीतमय माहौल में विजेता व उपविजेता टीमों को पुरस्कृत किया गया। मौके पर मुख्य अतिथि विश्वरूप मुखोपाध्याय, (अध्यक्ष, विद्यालय प्रबंधन समिति सह क्षेत्रीय निदेशक, सीवीपी), परमपूज्या स्वामिनी संयुक्तानंद सरस्वती (आचार्या, चिन्मय मिशन केन्द्र, बोकारो) विशिष्ट सम्मानित अतिथि मोहित मालपानी (मुख्य महाप्रबंधन, वित्त विभाग, सेल, बोकारो), महेश त्रिपाठी (सचिव, विद्यालय प्रबंधन समिति) सूरज शर्मा (प्राचार्य सह आयोजन समिति के अध्यक्ष) राजेश कुमार सिन्हा (पर्यवेक्षक, सी बी एस ई), आर एन मल्लिक (कोषाध्यक्ष, चिन्मय विद्यालय, बोकारो) एवं टीपी चौबे मौजूद रहे।

इधर, राज्यस्तरीय एथलेटिक्स में कांड्रा के करमदेव को लंबीकूद में मिला पहला स्थान

झारखण्ड स्तरीय सीबीएसई क्लस्टर -3 एथलेटिक्स 2022 खेलकूद प्रतियोगिता रांची स्थित विकास विद्यालय में आयोजित की गई। इसमें झारखण्ड के सभी जिलों के सीबीएसई विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। बोकारो जिले के चास प्रखंड अंतर्गत काण्ड्रा ग्राम के छात्र करमदेव माहथा (सुपुत्र अयोध्या प्रसाद माहथा) ने हाई जम्प में राज्यभर में पहला स्थान प्राप्त कर अपने गांव और जिले का नाम रोशन किया। आदर्श विद्यालय मंदिर, चास में 12वीं कक्षा के छात्र करमदेव माहथा ने लांग जम्प में 5.65 मीटर जम्प कर झारखण्ड स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया। झारखण्ड सांस्कृतिक मंच के केंद्रीय महासचिव राजदेव माहथा ने अपने बयान देते हुए कहा कि करमदेव माहथा द्वारा झारखण्ड स्तरीय इस एथलेटिक्स प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर बोकारो जिला, चास प्रखंड एवं काण्ड्रा ग्राम का नाम रोशन किया है।

नए साल के पहले महीने में रिलीज होंगी ये फिल्में

2022 बॉलीवुड के हिसाब से उतना अच्छा नहीं रहा, लेकिन साउथ की फिल्मों ने इस साल बॉक्स ऑफिस पर बहुत ज्यादा धमाल मचाया। 'आरआरआर', 'केजीएफ' और ऐसी ही बहुत सी फिल्में हिंदी दर्शकों को भी बहुत पसंद आईं। 'द कश्मीर फाइल्स' और 'ब्रह्मास्त्र' को छोड़ दिया जाए तो ये साल हिंदी सिनेमा के लिए बहुत खास नहीं था, लेकिन 2023 की तैयारियों में पूरा बॉलीवुड अभी से ही जुट गया है। नए साल के पहले महीने में ये दो फिल्मे खास तौर से रिलीज होंगी, जिसका दर्शकों को इंतजार है-

पठान : रिलीज डेट- जनवरी 2023- शाहरुख खान, जॉन अब्राहम, दीपिका पादुकोण की फिल्म पठान का टीजर हाल ही में रिलीज हुआ है। ये रिपब्लिक डे वीकेंड पर रिलीज होगी और 2018 में फिल्म 'जीरो' के बाद से किंग खान दोबारा 2023 में सिल्वर स्क्रीन पर लौटेंगे। ये एक सुपर एक्शन पैक्ड फिल्म होगी जिसमें शाहरुख के लुक की बहुत तारीफ हो रही है।

आदि पुरुष : रिलीज डेट - 12 जनवरी 2023 - ये शायद साल की सबसे बड़ी और सबसे पहले आने वाली ब्लॉकबस्टर फिल्म होगी। हालांकि, इसकी रिलीज डेट थोड़ी बदल सकती है। सुपरस्टार प्रभास की ये फिल्म भगवान राम पर आधारित है और ऐसे में इसका इंतजार अभी से ही होने लगा है।

पेज- एक का शेष

पैरवी है....

आग सुलग गई, जाहिर है यह आनेवाले दिनों के लिए खुद के लिए ही आंच न बन जाए, इसकी आशंका से भी इनकार नहीं किया जा सकता। इसकी तपिश अब प्रदेश नेतृत्व तक भी पहुंचती दिख रही है और राजेश ठाकुर की जगह कोई नया चेहरा राज्य में संगठन की जिम्मेदारी संभाल सकता है। गौरतलब है कि बिहार में अखिलेश प्रसाद सिंह को प्रदेश अध्यक्ष बनाया गया है। वहां हुई फेरबदल के जातीय समीकरण का असर झारखंड में भी दिख सकता है।

अब बोली में...

बोकारो में आयोजित राज्यस्तरीय राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस में किया। इसके लिए वह साइंस कांग्रेस की नेशनल लेवल पर होनेवाली कार्यशाला के चयनित भी हो चुका है। उल्लेखनीय है कि अभिनीत शरण ने इसके पूर्व बुजुर्गों के लिए एंटी शेकिंग स्पून का आविष्कार किया, जिसकी मदद से भोजन का निवाला बगैर हिले-डुले मुंह तक पहुंच सकता है। यह वैसे तमाम बुजुर्गों के लिए काफी लाभप्रद है, जो न्यूरोलॉजिकल स्थितियों के कारण होने वाले हाथ कांपने संबंधी पार्किंसन नामक बीमारी से ग्रसित हैं। इस नवोन्मेषता के लिए इंस्पायर अवार्ड- मानक के लिए भी उसका चयन हो चुका है। बीएसएल अधिकारी नवनीत कुमार और शिक्षिका निमिषा के पुत्र अभिनीत को बचपन से ही रोबोटिक्स में काफी रुचि थी। वह आगे चलकर एक सफल इंजीनियर बनना चाहता है। उसने अपने इस नए आविष्कार के पीछे डीपीएस बोकारो के प्राचार्य एएस गंगवार एवं अपने शिक्षकों के मार्गदर्शन के सहयोग को महत्वपूर्ण बताया।

चल जंगल चल

चल जंगल चल, चल जंगल चल
जंगल के सभी किनारों पर हैं
जंगल खड़े पहाड़ों पर हैं
द्वीपों, रेगिस्तानों में हैं
बर्फीले मैदानों में हैं

जैसी स्थिति, वैसा जंगल
अलग-अलग वन का भी रूपाकार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल चल

चल जंगल चल, चल जंगल चल
कहीं साल वन, कहीं बाँस वन
कहीं भरे हैं बस पलाश वन
मिश्रित वन हैं, खैर-बनी है
सागवान वन उधर कहीं है

पेड़ भरे चौड़े पत्तों से
फूल-फूलकर करते वन गुलजार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल चल

(क्रमशः)

कुमार मनीष अरविन्द

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी विजय कुमार झा द्वारा दामिनी प्रिन्टर्स, जेब्री.- 12, सिटी सेन्टर, सेक्टर-4, बोकारो से मुद्रित एवं सेक्टर-3बी/94, बोकारो स्टील सिटी (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक : विजय कुमार झा***
प्रबंध संपादक : **कंचन झा**, दिल्ली ब्यूरो : **श्रवण कुमार झा,** फोन/फैक्स : (06542) 246899, E-mail : mithilavarnan@gmail.com, आरएनआई.पंजीयन संख्या : 48973/89 (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये जिम्मेवार)

भारत आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर राष्ट्र, पर अंदरूनी मामलों में हस्तक्षेप बर्दाश्त नहीं : रक्षा मंत्री

ब्यूरो संवाददाता

नई दिल्ली : भारत एक आत्मविश्वासी एवं आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में उभरा है, जो सामूहिक भलाई के लिए मिलकर काम करने में विश्वास रखता है, लेकिन अपने आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप को स्वीकार नहीं करता है। यह बात रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने नई दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में कही। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की कूटनीति, विश्वसनीयता और नेतृत्व संबंधी गुणों को श्रेय दिया, जिन्होंने अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारत की छवि को एक एजेंडा-सेटर के रूप में बदल दिया है। उन्होंने कहा, "भारत ने आज खुद को वैश्विक उच्च पटल पर स्थापित कर लिया है। हमारे शांतिप्रिय स्वभाव और स्वाभिमान को दुनिया स्वीकार कर सम्मान दे रही है।"

संघर्ष प्रभावित यूक्रेन से 22,500 से अधिक भारतीयों को निकालने के लिए शुरू किए गए 'ऑपरेशन गंगा' का उल्लेख करते हुए श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि यह प्रधानमंत्री द्वारा रूस, यूक्रेन और अमेरिका के राष्ट्रपतियों के साथ बात करने के बाद संभव हुआ। उन्होंने इसे एक वैश्विक नेता के रूप में पूरी दुनिया में श्री मोदी की विश्वसनीयता व स्वीकार्यता का वसीयतनामा करार दिया।

देश की भलाई के लिए प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण की सराहना करते हुए रक्षा मंत्री ने जोर देकर कहा कि मोदी के नेतृत्व में भारत पिछले 8.5 वर्षों में 3.5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की जीडीपी के साथ पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। उन्होंने कहा, "2014 से पहले, भारत 'फ्रैजाइल फाइव' देशों में से एक था, यह शब्द निवेश फर्म मॉर्गन स्टेनली द्वारा गढ़ा गया था। आज हम उस श्रेणी से निकलकर दुनिया की 'फैबुलस फाइव' अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हो गए हैं। मॉर्गन स्टेनली के प्रबंध निदेशक चेतन अह्या द्वारा वैश्विक आर्थिक दृष्टिकोण पर हाल ही में प्रकाशित एक लेख के अनुसार भारत 2027 तक अमेरिका और चीन के बाद तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होगी। अगले दस वर्षों में भारत की जीडीपी बढ़कर 8.5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर हो जाएगी। यह स्पष्ट रूप से दशार्ता है कि भारत दुनिया के लिए आशा और विश्वास का केंद्र बन गया है।"

श्री सिंह ने कहा कि 'आत्मनिर्भर भारत' के दृष्टिकोण को साकार करने के सरकार के प्रयासों के कारण भारत विनिर्माण क्षेत्र की मुख्यधारा में शामिल हो गया है और अब आईएनएस विक्रांत जैसे स्वदेशी विमान वाहक का उत्पादन कर रहा है। उन्होंने कहा, सरकार का ध्यान विदेशी कंपनियों को 'मेक इन इंडिया, मेक फॉर द वर्ल्ड' के लिए आमंत्रित करते हुए उनके साथ-साथ देश के विकास के लिए निजी क्षेत्र की भागीदारी बढ़ाने पर है। उन्होंने कहा कि आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए रक्षा मंत्रालय द्वारा डीपीएसयू के लिए घटकों/लाइन रिप्लेसमेंट युनिटों सहित 3,700 से अधिक वस्तुओं और 310 अन्य रक्षा संबंधी वस्तुओं की सकारात्मक स्वदेशीकरण सूची जारी की गई है। उन्होंने कहा कि सरकार के प्रयासों के कारण, रक्षा निर्यात अब 2014 में 900 करोड़ रुपये की तुलना में 14,000 करोड़ रुपये को पार कर गया है और 2025 तक हम 25,000 करोड़ रुपये के निर्यात के लक्ष्य की प्राप्ति की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।"

रक्षा मंत्री ने कहा कि आज भारत के पास आशा, नीति की स्थिरता और नेतृत्व की गुणवत्ता है। उन्होंने कोविड-19 महामारी के दौरान भारत के प्रबंधन पर विभिन्न देशों और संगठनों द्वारा की गई सराहना के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि महामारी के दौरान भारत ने न केवल मास्क, पीपीई किट का निर्माण किया और स्थानीय जरूरतों को पूरा करने के लिए परीक्षण प्रयोगशालाएं स्थापित कीं, बल्कि कई देशों की मदद भी की। उन्होंने कहा, "हमने लगभग 100 देशों को कोविड टीकों की आपूर्ति भी की। अब तक दो अरब 19 करोड़ से अधिक टीके की खुराक उपलब्ध कराना हमारे टीकाकरण कार्यक्रम की एक बड़ी उपलब्धि है।"

भारत की जी-20 अध्यक्षता पर श्री सिंह ने कहा कि वसुधैव कुटुम्बकम और वैश्विक कल्याण की भावना से प्रेरित होकर प्रधानमंत्री ने कार्यक्रमों के माध्यम से उन देशों के विकास के भारत के संकल्प को साझा करने का फैसला किया है, जो अभी तक कोविड-19 से उबर नहीं पाए हैं। जी-20 के इन आयोजनों की थीम 'वन अर्थ, वन फैमिली, वन फ्यूचर' है, जिसके जरिए विकास का समावेशी और निर्णायक रोडमैप तैयार किया जाएगा ।

रक्षा मंत्री ने देश के भौतिक और डिजिटल बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए पिछले 8.5 वर्षों में सरकार द्वारा किए गए अनेक प्रक्रियात्मक और संरचनात्मक सुधारों को भी सूचीबद्ध किया । इनमें प्रधानमंत्री जन धन योजना, डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर, नेशनल इंफ्रास्ट्रक्चर पाइपलाइन और गुड्स एंड सर्विसेज टैक्स (जीएसटी) शामिल हैं । उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री के 'आत्मनिर्भर भारत' के दृष्टिकोण के अनुरूप देश में एक गतिशील स्टार्ट-अप पारितंत्र बनाया गया है। उन्होंने कहा कि देश में पंजीकृत स्टार्ट-अप की संख्या 2014 में महज 400-500 से बढ़कर 2022 में 80,000 से अधिक हो गई है, 100 से अधिक यूनिकॉर्न बन गए हैं ।

श्री सिंह ने कहा कि देश की मजबूत आर्थिक स्थिति के कारण, कोविड-19 के बावजूद रिकॉर्ड प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) हुआ है। उन्होंने कहा कि 2021-22 में अब तक का सबसे अधिक 83.6 बिलियन डॉलर का एफडीआई दर्ज किया गया। उन्होंने विश्वास जताया कि आने वाले समय में भारत सबसे शक्तिशाली देशों में से एक बनेगा।

सभी दंत समस्याओं का एक समाधान
डॉ. नरेन्द्र मेमोरियल डेंटल सेंटर
138 को-आपरेटिव कॉलोनी (बोकारो)
दांत एवं मुंह संबंधी सभी बीमारियों के इलाज की पूर्ण सुविधा।
समय : सुबह 9.30 से दोपहर 2.30 बजे तक
संध्या 5.00 बजे से रात 9.00 बजे तक
(शनिवार अवकाश)
डा. निकेत चौधरी (संध्या में)
डा. प्रशान्त कुमार, एम.डी.एस.

CASHLESS FACILITY CASHLESS FACILITY CASHLESS FACILITY
शिवम् हॉस्पीटल में
सेल के रिटायर्ड कर्मचारियों के लिए
मोतियाबिन्द का ऑपरेशन
एवं लेंस लगाया जाता है।

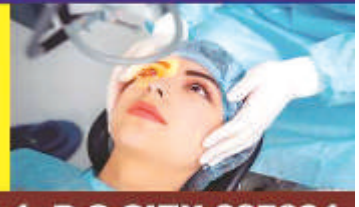

E-2, LAXMI MARKET, SECTOR-4, B.S.CITY-827004
PH: 06542-232623/233475, MOB: 7488090631

पुराने व जटिल रोगों से हैं परेशान ?
होमियोपैथ से निजात पाने के लिये संपर्क करें-
प्रो. डॉ. काशीश्वर किशोर DHMS (Distinction), B.H.M.S (BU).
प्रो. भूपेन्द्र नारायण मंडल होमियोपेथिक मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, सहरसा
पूर्व सदस्य- होमियोपैथिक मेडिकल कार्उंसिल ऑफ इंडिया, नई दिल्ली।
बैठने का स्थान : शॉपिंग सेन्टर, शॉप नं. 58, पहला तल्ला, को-ऑपरेटिव कॉलोनी, बीएस सिटी
(प्रातः 9.30- दोपहर 12.15 एवं संध्या 5.30-6.30)
जर्मन होमियो प्वाइंट, एफ/9, सिटी सेन्टर, सेक्टर-4, बीएस सिटी
(सोमवार से शनिवार: संध्या 7.00-8.30), रविवार (संध्या 5.00-8.30)
Mob.- 9431162319 (Consultation after appointment only).